मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयागराज

प्रयागस्थ मैथिलवृंद का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था

269/72 A/1, आज़ाद नगर, साऊथ मलाका, प्रयागराज – 211 001

मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयागराज

मिथिला प्रदेश सदैव अपने गौरवशाली इतिहास का साक्षी रहा है | विश्व में जब भी ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म, नारी-शक्ति, एवं मानवीय मूल्यों की चर्चा हुई, मिथिला प्रदेश का प्रतिनिधित्व सदैव अग्रणी रहा है | वर्तमान में मिथिला प्रदेश का भौगोलिक परिदृश्य अपने पुरातन प्रदेश बिहार राज्य से लेकर नव-निर्मित झारखण्ड राज्य एवं पड़ोसी देश नेपाल तक फैला हुआ है | हालांकि, मिथिला निवासी, जिन्हे मैथिलवृंद भी कहा गया है, अपने ज्ञान-विज्ञान एवं तीक्ष्ण बुद्धि के बल पर सिर्फ मिथिला ही नहीं अपितु पुरे विश्व के लगभग हर भूभाग में अपना परचम लहरा रहे हैं| मिथिला एक सांस्कृतिक क्षेत्र है जो अपनी बौद्धिक परम्परा के लिये भारत और भारत के बाहर जानी जाती रही है। इस क्षेत्र की प्रमुख भाषा मैथिली है, जिसे भारतीय संविधान के अष्टम अनुसूची में होने का गौरव प्राप्त है | हिन्दू धार्मिक ग्रंथों में सबसे पहले इसका संकेत शतपथ ब्राह्मण में तथा स्पष्ट उल्लेख वाल्मीकीय रामायण में मिलता है। मिथिला का उल्लेख महाभारत, रामायण, पुराण तथा जैन एवं बौद्ध ग्रन्थों में हुआ है। वृहद्विष्णुपुराण में मिथिला की सीमा (चौहद्दी) का स्पष्ट उल्लेख करते हुए कहा गया है कि- पूर्व में कोसी से आरंभ होकर पश्चिम में गंडकी तक 24 योजन तथा दक्षिण में गंगा नदी से आरंभ होकर उत्तर में हिमालय वन (तराई प्रदेश) तक 16 योजन मिथिला का विस्तार है। इस प्रकार उल्लिखित सीमा के अंतर्गत वर्तमान में नेपाल के तराई प्रदेश के साथ बिहार राज्य के पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, शिवहर, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, वैशाली, समस्तीपुर, बेगूसराय, दरभंगा, मधुबनी, सुपौल, मधेपुरा, सहरसा, शेखपुरा, लख्खीसराय, जमुई, मुंगेर, अररिया, पूर्णिया, गोड्डा, बांका, दुमका, देवघर, जामताड़ा, पाकुर, साहेबगंज, कटिहार, किशनगंज, वैशाली और खगड़िया जिले का प्रायः पूरा भूभाग तथा भागलपुर जिले का आंशिक भूभाग आता है।

विश्व विख्यात मिथिला चित्रकला

मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयागराज प्रयागस्थ प्रवासी मैथिलवृंद का एक सामाजिक संस्था है जो मिथिला के प्राचीन पहचान स्वरूप लोकभाषा, लोकसाहित्य, लोकनृत्य लोकाचार, भौगोलिक प्रतीक आदि को संरक्षित और संवर्धित करने में विगत 28 वर्षों से सतत प्रयत्नशील है । संस्था अपने सदस्यों के सहयोग से प्रयागराज में प्रतिवर्ष मिथिला के लोक कवि कविकोकिल श्री विद्यापति ठाकुर उर्फ विद्यापति के सम्मान में एक दो-दिवसीय "विद्यापति समारोह" का आयोजन करता है जिसमें उपरोक्त विषयों का गैर-मैथिल में प्रचार-प्रसार और मैथिलों के बीच इसका सुदृढीकरण करता है। इस पर्व में साहित्य क्षेत्र से जुड़े विद्वानों का समागम, कलाकारों का मंच प्रस्तुति तथा जनमानस के लिए मिथिला के विभिन्न आयामों पर प्रदर्शनी लगाया जाता है। इसके अतिरिक्त वर्ष भर समय-समय पर विभिन्न अवसरों पर प्रवासी मैथिलों का आपसी संवाद, बैठक एवं सहयोग का कार्य सम्पन्न किया जाता है। इसी धरोहर को संरक्षित एवं संवर्धित करने के उद्देश्य से इस वर्ष भी दो दिवसीय, 24-25 दिसंबर 2022 को, विद्यापति पर्व मनाने का लक्ष्य निश्चय किया गया है।

संस्था का आदर्श वाक्य : चरैवेति चरैवेति ।

यह वाक्य संस्था के प्रवासी मैथिलों को जीवन में हमेशा "चलते रहो-चलते रहो" की प्रेरणा देती है। जिस तरह "बहता पानी निर्मला" होता है वैसे ही यदि प्रवासी चलते रहेगें तो एक दिन अपने गंतव्य को प्राप्त कर आनंदित होगें।

संस्थाका कार्यक्रम: विद्यापति समारोह, जानकी नवमी, होली मिलन आदि ।

संस्था का मुखपत्र : स्मारिका, यह एक वार्षिक पत्र है जिसमें संस्था के वार्षिक क्रिया कलाप सहित आय व्यय का विस्तृत विवरण एवं सदस्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रकाशित किया जाता है।

संस्था का पत्रिका : प्रवासी, एक वार्षिक पत्रिका जिसके माध्यम से संस्था के सदस्यगण मिथिला के लोकसाहित्य, सांस्कृतिक क्रियाकलाप एवं अपने भावों को लेख, कहानी, कविता आदि के माध्यम से व्यक्त कर इनका प्रचार-प्रसार करते हैं।

संस्था का पता : 269/72 A/1, आज़ाद नगर, साऊथ मलाका , प्रयागराज – 211 001

आयोजित कार्यक्रम

साहित्यिक:

मिथिला भूमि में अनेकानेक विद्वतजनों ने जन्म लिया है जिनका अपना अपना गौरवशाली इतिहास रहा है । इन्ही विद्वानों के स्मृति में संस्थान मैथिल साहित्य से जुड़े कवि एवं साहित्यकार का सम्मेलन आयोजित करना यथा कालिदास, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, विद्यापति, लालदास, चंदा झा, सर (डॉ) गंगानाथ झा, डॉ अमरनाथ झा, परमेश्वर झा, नागार्जुन आदि|

सांस्कृतिक : मिथिला सदा से एक सांस्कृतिक क्षेत्र रहा है जहा प्रत्येक धर्म और पंथ को मानने वाले साथ साथ रहे हैं और अपने अपने रीति रिवाज के द्वारा समाज को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाया है। विश्व विदित मिथिला की मिथिला चित्रकारी (अरिपन, कोहवर, भित्तिचित्र, भूमि चित्र आदि रूप में), लोकनृत्य (जटा जटिन, झिंझिया, डमकच आदि), लोक त्योहार (सामा-चकेबा, चौठचन्द्र, चूड़िशीतल आदि) यहाँ की सांस्कृतिक पहचान है । इन्ही सबको संरक्षित करने के लिए संस्था मिथिला के लोक कलाकारों का मंच प्रस्तुति का आयोजन करता है ।

प्रदर्शनी : तीर्थराजे तीरभुक्ति

मिथिलांचल जो की तिरहुत के नाम से भी जाना जाता है, अपने विशिष्ट भौगोलिक प्रतीकों एवं उत्पादों के लिए पहचाना जाता है । जैसे यहाँ की भाषा, साहित्य, महापुरुष, विद्वान, पहनावा, खान-पान, मधुबनी चित्रकारी, मखाना, आम, हस्तशिल्प कार्य, हथकरघा कार्य आदि । यह सभी देश ही नहीं विदेशों में भी प्रसिद्धि प्राप्त की है और समय के साथ इसका प्रचार प्रसार आवश्यक है। तिरहुत के इन्ही विभिन्न आयामों को ध्यान में रखते हुए गैर मैथिल एवं मिथिला के नए पीढ़ी को सीखने तथा दिखाने के उद्देश्य से संस्था द्वारा तीर्थराज प्रयागराज में तीर्थराजे तीरभुक्ति नाम से प्रदर्शनी का आयोजन किया जायेगा । इस प्रदर्शनी में मिथिला के पहचान को विभिन्न चित्रों, मूर्तियों, प्रतिमाओ, प्रतिरूपों, बैनरों, वस्तुओ आदि के माध्यम से प्रदर्शित किया जायेगा।

संस्था के प्रमुख पदाधिकारीगण

(डॉ अवधेश कुमार झा)	(डॉ धर्म नाथ झा)	(श्री भगीरथ मिश्र)
अध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष

जय मिथिला/ जय मिथिला
जय मैथिली/ जय मैथिली
जय जानकी/ जय जानकी
मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयागराज
मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयागराज